तात्पर्य

'ब्रह्मसंहिता' में उल्लेख है कि श्रीभगवान् नित्य सहस्त्रों रूपों में हैं, जिनमें राम, नृसिंह, नारायण, आदि रूप प्रधान हैं। उनके ऐसे असंख्य रूप हैं। अर्जुन जानता है कि अस्थायी विश्वरूप को धारण करने वाले श्रीकृष्ण साक्षात् स्वयं भगवान् हैं; इसलिए अब वह उनका चिन्मय नारायण रूप देखना चाहता है। इस श्लोक से श्रीमद्भागवत का यह सिद्धांत निश्चित होता है कि श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् हैं, अन्य सब रूपों का प्रादुर्भाव उन्हीं से है। वे अपने अंशों से भिन्न नहीं हैं; अपने प्रत्येक रूप में वे भगवान् हैं। सभी रूपों में श्रीकृष्ण नित्य नवकिशोर रहते हैं, क्योंकि यह भगवान् का शाश्वत् स्वरूप-लक्षण है। श्रीकृष्ण को इस प्रकार जानने वाला तत्काल प्राकृत-जगत् के सम्पूर्ण दोषों से मुक्त हो जाता है।

श्रीभगवानुवाच।
मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं
रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्।
तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं
यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम्।।४७।।

श्रीभगवान् उवाच=श्रीभगवान् ने कहा; **मया**=मैंने; **प्रसन्नेन**=अनुग्रहपूर्वक; **तव**=तुझे; **अर्जुन**=हे अर्जुन; **इदम्**=यह; **रूपम्**=रूप; **परम्**=माया के गुणों से अति परे; **दर्शितम्**=दिखाया है; **आत्मयोगात्**=अपनी योगशक्ति के द्वारा; **तेजोमयम्**=देदीप्यमान; **विश्वम्**=विराट्; **अनन्तम्**=सीमारहित; **आद्यम्**=सब का आदि; **यत्**=जो; **मे**=मेरा (रूप); **त्वत्**=तेरे; **अन्येन**=अतिरिक्त दूसरे ने; **न दृष्टपूर्वम्**=पहले नहीं देखा।

अनुवाद

श्रीभगवान् ने कहा, हे अर्जुन! मैंने तुझ पर अनुग्रहपूर्वक प्राकृत-जगत् के अन्तर्गत यह विश्वरूप तुझे अपनी योगशक्ति के प्रभाव से दिखाया है। तेरे पूर्व किसी ने भी इस अनन्त तेजोमय रूप को नहीं देखा है।।४७।।

तात्पर्य

अर्जुन को श्रीभगवान् के विश्वरूप के दर्शन की अभिलाषा थी। अतएव अपने भक्त के लिये स्वरूपभूता करुणा से प्रेरित होकर श्रीकृष्ण ने उसी पूर्ण तेजोमय और ऐश्वर्यशाली विश्वरूप का दर्शन कराया। यह रूप सूर्य के सदृश तेजोमय था और उसके अनेक मुख थे, जो तीव्र गति से परिवर्तनशील थे। सखा अर्जुन को मनोकामना-पूर्ति के लिये ही श्रीकृष्ण ने वह रूप दिखाया। इसे उन्होंने अपनी योगशक्ति के प्रभाव से प्रकट किया, जिसका तत्त्व मनुष्य के लिए अचिन्त्य है। अर्जुन से पूर्व श्रीभगवान् के इस रूप को किसी ने नहीं देखा था। किन्तु अर्जुन को दिखाये जाते समय स्वर्ग और अन्तरिक्ष के अन्य लोकों में स्थित भक्तों को भी इसका दर्शन हुआ। भाव यह है कि श्रीकृष्ण ने अनुग्रहपूर्वक अर्जुन के प्रति जिस विश्वरूप को प्रकट